सब जगह सीखने की संस्कृति का विकास हो रहा है

विश्व न्याय मंदिर
बहाई विश्व केन्द्र

17 जनवरी, 2003

सभी राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को

प्रिय बहाई मित्रगण,

बहाउल्लाह के प्रति अत्यन्त कृतज्ञता के साथ हमने महाद्वीपीय सलाहकार मंडलों के सम्मेलन को 9 जनवरी 2001 को सम्बोधित अपने संदेश के बाद के दो सालों में पाँच वर्षीय योजना को विस्तार पाते देखा है। यह देखकर अत्यंत खुशी होती है कि सब जगह सीखने की संस्कृति का विकास हो रहा है और बहाई समुदाय समूहों द्वारा धर्मप्रभु को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहा है। ऐसे समय में, जब समुदाय का सामूहिक अनुभव इतने सार्थक ढंग से एक कदम आगे बढ़ने का रहा हो, हम इसे समयोचित समझते हैं कि आपके साथ हम अब तक प्राप्त जानकारियों की समीक्षा करें तथा उठे हुये मुद्दों को स्पष्ट किया जाये।

योजना के शुरू के महीनों में राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं ने बड़ी सुगमता के साथ अपने अधीन के भू-भागों को पूरी तरह विभाजित कर समुदाय-समूहों का निर्माण किया और उसे बहाई समुदायों की मानवीय संख्या से नहीं जोड़ा। विश्व केन्द्र पर प्राप्त रिपोर्ट यह संकेत देती है कि अब दुनिया भर में लगभग 17,000 समुदाय-समूह हैं। इनमें वे देश शामिल नहीं हैं जिनमें किसी-न-किसी कारण से प्रभुधर्म पर प्रतिबंध लगे हैं। देश-देश में समुदाय समूहों की संख्या में भी भारी अन्तर है। भारत में जहाँ 1,580 समुदाय-समूह हैं वहीं सिंगापुर अपने को केवल एक समुदाय-समूह के रूप में देखता है। कुछ समूहों में कुछ हजार लोग ही रहते हैं, जबकि अन्य समूहों में लाख-ओ-लाख लोग निवास करते हैं। अधिकांश हिस्सों में बड़े-बड़े शहरी क्षेत्र एक ही समूह माने गये हैं और एक ही स्थानीय आध्यात्मिक सभा के अधीन हैं, हांलाकि इन्हें विभिन्न खंडों में विभाजित किया गया है, ताकि उनके लिये योजना बनाने और काम करने में आसानी हो। देख-रेख की दृष्टि से, सुविधाजनक क्षेत्रों में देशों-प्रदेशों को विभाजित करने के बाद 9 जनवरी के संदेश में वर्णित प्रभुधर्म के विकास की अवस्थाओं के अनुरूप राष्ट्रीय समुदायों ने उन्हें तुरंत श्रेणीबद्ध

कर लिया। यह कर लेने से समुदाय की सम्भावनाओं को तलाशने की सही दिशा मिली, लेकिन सही मूल्यांकन के लिये जरूरी समझे जाने वाले मापदण्ड को अधिक सूक्ष्म दृष्टि प्रदान करने का काम संस्थाओं के सामने लगातार एक चुनौती के रूप में है। किसी समुदाय-समूह को किसी श्रेणी विशेष में रखना उसकी स्थिति से सम्बन्धित कोई वक्तव्य नहीं है। अपितु, यह एक तरीका है उसके विकास की क्षमता के मूल्यांकन का, ताकि विकास की प्रक्रिया से ताल-मेल खाता रास्ता अपनाया जा सके। मापदण्ड निश्चित रूप से अलाभकारी होंगे, लेकिन मूल्यांकन के लिये अच्छी तरह सोची-विचारी गई योजना जरूरी है। दो मापदण्ड विशेष रूप से महत्वपूर्ण जान पड़ते हैं : समुदाय-समूह में प्रभुधर्म के विस्तार और सुगठन के लिये प्रशिक्षण संस्थान द्वारा तैयार किये गये मानव संसाधन की संख्या और इन संसाधनों को सेवा के क्षेत्र में उत्प्रेरित करने की संस्थाओं की योग्यता।

अब लगभग हर देश में इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है कि जिन समुदाय-समूहों को प्राथमिकता दी गई है उनके वर्तमान विकास के स्तर को दूसरे उच्चतर स्तर तक ले जाया जाये। जो बात असाधारण रूप से स्पष्ट हो चुकी है वह यह है कि इस संदर्भ में प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि लगातार बढ़ती हुई संख्या में मित्रों को सिलसिलेवार ढंग से मुख्य पाठ्यक्रमों की कड़ी में बांधे रखने में क्षेत्र में सेवारत संस्थान की समानान्तर प्रक्रिया कितनी प्रभावी है। इन पाठ्यक्रमों की सफलता के प्रमाण हैं दुनिया भर में बढ़ी हुई गतिविधियाँ, जो यह संकेत देती हैं कि इन पाठ्यक्रमों ने मित्रों में वह भावना जगायी है जो किसी भी समुदाय-समूह के विकास के लिये किये जाने वाले विविधि कार्यों हेतु जरूरी है।

खासतौर से प्रसन्नता यह देखकर होती है कि उत्साह और साहस के साथ-साथ पूरे बहाई विश्व में पहल करने और साधनसम्पन्न बनने के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। समर्पण, उत्साह, विश्वास और दृढ़ता-ये कुछ गुण हैं जो प्रत्येक महाद्वीप में अनुयायियों की अलग पहचान स्थापित कर रहे हैं। इन गुणों का प्रदर्शन उनके द्वारा किया जा रहा है जो स्वदेश में पायनीयर के रूप में अपनी सेवायें देने के लिये उठ खड़े हो रहे हैं, लेकिन ये गुण केवल उन तक ही सीमित नहीं हैं। जैसी कि हमने आशा की थी, संस्थान कार्यक्रम के उत्साही प्रतिभागियों द्वारा प्रभुधर्म के संदेश से अछूते क्षेत्रों में संदेश ले जाने के लक्ष्य को सफलतापूर्वक पाया जा रहा है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों से प्राप्त ज्ञान और कार्यकुशलता से लैस ये प्रतिभागी एक नये क्षेत्र में प्रभुधर्म को स्थापित कर रहे हैं और अनुभवहीन समुदाय को अस्तित्व-बोध दे रहे हैं।

अधिकांश समुदाय-समूहों में विकास के एक चरण से दूसरे चरण में जाने को स्डटी सर्कल, भक्तिपरक बैठकों और बच्चों की कक्षाओं में बढ़ोत्तरी और इनके परिणामस्वरूप हुये विस्तार के रूप में परिभाषित किया जा रहा है। संस्थान पाठ्यक्रमों के माध्यम से जैसे-जैसे अनुयायियों के बीच मानव-अस्तित्व के आध्यात्मिक आयाम के प्रति जागरुकता बढ़ती है वैसे-वैसे भक्तिपरक बैठकों की संख्या बढ़ जाती है। बच्चों की कक्षायें भी पहले के सिलसिलेवार पाठों से प्राप्त प्रशिक्षण

के प्रतिफल हैं। जैसे-जैसे ये गतिविधियां सुव्यवस्थित रूप से समुदाय में विस्तार पाती हैं वैसे-वैसे जिज्ञासुओं की संख्या भी बढ़ती जाती है, जो अधिकांशतः अनौपचारिक बैठकों अथवा स्टडी सर्कल में शामिल होने की इच्छा व्यक्त करते हैं। इसके बाद वे बहाउल्लाह में अपनी आस्था व्यक्त करते हैं और प्रारम्भ से ही, विकास की एक गतिशील प्रक्रिया में अपने को सक्रिय प्रतिभागियों के रूप में देखते हैं। साथ ही, शिक्षण के क्षेत्र में व्यक्तिगत और सामूहिक पहल में तेजी आती है, जिससे इस प्रक्रिया को और अधिक शक्ति प्राप्त होती है। संस्थापित समुदायों में नई चेतना जगती है और नवगठित बहाई समुदाय अपनी स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं को चुनने का सौभाग्य पाते हैं।

इस प्रकार स्टडी सर्कल, भक्तिपरक बैठकों और बच्चों की कक्षाओं द्वारा स्थापित सामंजस्य समुदाय-समूह में विकास की प्रारम्भिक प्रेरणा प्रदान करता है, एक ऐसी प्रेरणा जो इन मूल गतिविधियों के बढ़ने के साथ-साथ उनमें शक्ति भरती जाती है। ऐसे अभियान जो बड़ी संख्या में अनुयायियों को मूल पाठ्यक्रमों को सिलसिलेवार ढंग से पूरा करने में मदद पहुँचाते हैं, सेवा के आवश्यक कार्य करने के लिये प्रेरित करते हैं, गतिविधियों की बढ़ोत्तरी को और प्रोत्साहित करते हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि प्रशिक्षण के लिये की गई सुव्यवस्थित पहल ने बहाइयों के लिये वह राह निकाली है जिस पर चलकर वे अपने आस-पड़ोस के समाज में जा सकते हैं, मित्रों, परिवारों, पड़ोसियों और सहकर्मियों को बहाउल्लाह का संदेश दे सकते हैं और उनकी शिक्षाओं की विपुलता से परिचित करा सकते हैं। सीखने की प्रारम्भिक अवस्था के सर्वोत्तम उपहार हैं बाहर झाँकने की ये स्थितियाँ। पूरी दुनिया में क्रियाकलापों की जो रूपरेखा मूर्त रूप ले रही है वह प्रसार और सुगठन का जाँचा-परखा तरीका है। फिर भी, यह एक शुरूआत मात्र है।

दुनिया के अनेक भागों में लोगों को बड़ी संख्या में बहाउल्लाह का अनुयायी बना लेना पारम्परिक ढंग से कोई कठिन काम नहीं रहा है। इसलिये, यह देखकर उत्साह बढ़ता है कि कुछ अधिक विकसित समुदाय-समूहों में ग्रहणशील लोगों तक पहुँचने के विकास के वर्तमान ढाँचे में सुविचारित परियोजनायें शामिल की जा रही हैं, ताकि प्रसार की रफ्तार तेज की जा सके। ऐसी परियोजनायें शिक्षण की गति को बढ़ाती हैं, जो व्यक्तिगत प्रयासों के कारण पहले से अधिक गति पकड़ रही है और, जहाँ परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में नामांकन होने लगे हैं वहाँ यह प्रावधान किया जा रहा है कि नये अनुयायियों की एक बड़ी संख्या संस्थान कार्यक्रम से जुड़े, क्योंकि, जैसाकि हमने अनेक संदेशों में जोर देकर कहा है, इन मित्रों से कहा जायेगा कि बराबर बढ़ रही बहाइयों की आबादी की सेवा में ये जुटें। सामान्य तौर पर वे बहाइयों के घरों पर जाकर उनका ज्ञान बढ़ायेंगे, बच्चों को शिक्षित करेंगे, भक्तिपरक बैठकों का आयोजन करेंगे और स्टडी सर्कल का संचालन करेंगे ताकि विस्तार पाया हुआ समुदाय कायम रह सके।

यह सब स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के लिये पुलकित कर जाने वाले अवसर हैं। सहायक मंडल सदस्यों के साथ-साथ उनके लिये यह एक चुनौती है, जो उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में उपलब्ध बढ़ते हुये मानव संसाधन की शक्ति और प्रतिभा के उपयोग के लिये सलाह और सहयोग प्रदान करते हैं, ताकि एक संजीदा सामुदायिक जीवन का माहौल बने और वह समुदाय अपने आस-पास के समुदाय को प्रभावित करना शुरू कर दे। वैसे क्षेत्रों में जहाँ स्थानीय आध्यात्मिक सभायें नहीं हैं अथवा समुचित ढंग से कार्य नहीं कर रही हैं वहाँ समुदायों और स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के विकास की सुंदर सम्भावनायें नज़र आने लगी हैं।

विकास की इस प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों पर अनुयायियों की अधिक प्रतिभागिता खासतौर से संतोष की बात है। एक के बाद एक समुदाय-समूहों में प्रसार और सुगठन का जिम्मा लेने वालों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। समुदाय-समूह के स्तर पर हो रही परामर्श-बैठकें सम्भावनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ उत्साह पैदा कर रही हैं। यहाँ निर्णय लेने जैसी औपचारिकताओं से मुक्त, प्रतिभागी प्राप्त अनुभवों पर विचार करते हैं, मिली हुई अन्तर्दृष्टि को एक-दूसरे से बाँटते हैं, उठाये जाने वाले कदमों की छान-बीन करते हैं और इस बात की बेहतर समझ पाते हैं कि किस प्रकार योजना के लक्ष्यों को पाने में प्रत्येक व्यक्ति अपना योगदान दे सकता है। अनेक मामलों में ऐसे विचार-विमर्श छोटी अवधि के व्यक्तिगत तथा सामूहिक लक्ष्यों के लिये सहमति के अवसर प्रदान करते हैं। उभर रहे काम करने के तरीके की प्रमुख विशेषता है काम के दौरान सीखने की प्रवृत्ति।

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि आज जो भी हम देख रहे हैं वह प्रभुधर्म में मानवजाति के समूह-के-समूह द्वारा प्रवेश की वही प्रक्रिया है जिसकी झलक फारस के सम्राट को लिखी बहाउल्लाह की पाती में मिलती है, जिसका पूर्वज्ञान मास्टर अब्दुल-बहा को था और जिसका वर्णन धर्मसंरक्षक ने जनसमूह के हृदय-परिवर्तन के आवश्यक पूर्वाभास के रूप में किया है। इस प्रक्रिया के अगुआ के रूप में वे समुदाय-समूह हैं, जो हालांकि अभी भी तुलनात्मक दृष्टि से संख्या में थोड़े हैं, फिर भी विकास के सघन कार्यक्रम को शुरू करने के लिये तैयार हैं। इन समुदाय-समूहों के विकास के अगले चरण के लिये विकास के जिस पैमाने की जरूरत है वह हमारी गहरी कोशिश की माँग करती है, जिस गहराई को अभी भी पाना बाकी है। इस शक्तिशाली उत्तरदायित्व के प्रति समर्पित अपूर्व उत्साह दिव्य सहायता की शक्ति से प्रबलित हो, यही हमारी कामना है।

पवित्र समाधियों पर हमारी हार्दिक प्रार्थनाओं के लिये आश्वस्त रहें कि इन अमूल्य दिनों के असाधारण अवसरों को पूरी तरह समझने के आपके प्रयासों को बहाउल्लाह का आशीष और सम्पोषण प्राप्त हो।

हस्ताक्षरित : विश्व न्याय मंदिर